



पत्र-पुष्प



**“शुभ भावना, शुभकामना सम्पन्न बन चारों ओर स्नेह व सहयोग की किरणें फैलाओ,
विश्व कल्याणकारी बनो - शुभ प्रेरणायें”**

(20-8-21)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा पावरफुल याद की स्टेज द्वारा साक्षात्कारमूर्त बन लाइट माइट की किरणें फैलाने वाली निमित्त टीचर्स बहिर्न तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिर्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – वर्तमान समय बाबा के सभी बच्चे चारों ओर ज्ञान योग की बहुत अच्छी तपस्या करते लाइट माइट सम्पन्न शक्तिशाली याद द्वारा विश्व में शान्ति और शक्ति के वायब्रेशन फैलाने की सेवा कर रहे हैं। साथ-साथ रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के पावन पर्व पर भी सभी बहुत अच्छी सेवायें करते हैं। सभी को याद और सेवा के इस बैलेन्स की बहुत-बहुत मुबारक हो।

वर्तमान समय मधुबन के सभी स्थानों पर योग तपस्या के बहुत सुन्दर कार्यक्रम चल रहे हैं। शान्तिवन में समर्पित टीचर्स तथा भाईयों की योग भट्टी के साथ मानसरोवर, ज्ञान सरोवर और पाण्डव भवन में भी छोटे-छोटे ग्रुप्स में योग भट्टी के कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। ऐसे लगता जैसे बाबा ने अपने बेहद घर मधुबन को पूरे विश्व के लिए लाइट माइट हाउस बना दिया है। समय प्रमाण अभी बाबा अपने बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए बार-बार यही इशारा करते हैं बच्चे, अब बेहद के मास्टर रचयिता बन, अपने को बाप के साथ इस कल्प वृक्ष के ऊपर खड़ा हुआ अनुभव करो। मास्टर बीजरूप बन शक्तियों की, गुणों की, शुभ भावना शुभ कामना की, स्नेह की, सहयोग की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य ऊंचा रहता है तो सारे विश्व में स्वतः ही किरणें फैलती हैं। ऐसे मास्टर रचयिता वा मास्टर ज्ञान सूर्य बन सारे वृक्ष को सकाश दो।

बोलो, सभी यही सेवा कर रहे हो ना! समय अनुसार यह भी सेवा की बदलती हुई रूपरेखा है। यह योग की शक्ति ही बाबा के सभी सेवास्थानों को शान्तिकुण्ड बनायेगी, जिससे हर एक आकर्षित हो समीप आयेंगे और अपना ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार लेंगे। अभी समय है साक्षात्कारमूर्त बन साक्षात्कार कराने का, इसके लिए बाबा के सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण कर अपनी उपराम स्थिति में रहना है। न्यारे और प्यारेपन के बैलेन्स द्वारा सेवा करनी है, तब ही स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होगा।

बाबा कहते बच्चे, अभी बाप समान सम्पन्न बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो। जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म करते कर्मेन्द्रियों का आधार लो और न्यारे बन जाओ। सारे दिन में बीच-बीच में जब भी समय मिले, कार्यव्यवहार से दो चार सेकण्ड भी निकालकर विदेही बनने का अभ्यास करो तो बहुत मदद मिलेगी क्योंकि अन्तिम सीन में सब अचानक होना है, उस अचानक के पेपर में यह विदेहीपन का अभ्यास ही पास करायेगा। तो हर एक को अटेंशन रख यह अभ्यास जरूर करना है। बाकी आप सब बाबा की छत्रछाया में सुरक्षित और स्वस्थ होंगे।

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



सितम्बर 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

(अ) बीजरूप, लाइट माइट सम्पन्न पावरफुल स्थिति बनाओ

1) बीजरूप स्टेज सबसे पावरफुल स्टेज है, यह स्टेज लाइट हाउस, माइट हाउस का कार्य करती है। जैसे बीज द्वारा स्वतः ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है, ऐसे जब बीजरूप स्टेज पर स्थित रहते हो तो ऑटोमेटिकली विश्व को लाइट का पानी मिलता है।

2) जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर होते हुए चारों ओर अपनी लाइट फैलाता है, ऐसे लाइट हाउस बन, विश्व कल्याणकारी बन विश्व तक अपनी लाइट फैलाने के लिए पावरफुल स्टेज चाहिए। जैसे स्थूल लाइट का बल्व तेज पावर वाला होगा तो चारों ओर लाइट फैलेगी। जीरो पावर हद तक रहेगी। तो अब लाइट हाउस बनो न कि बल्व।

3) अभी तक की रिज़ल्ट में मास्टर सूर्य के समान नॉलेज की लाईट देने के कर्त्तव्य में सफल हुए हो लेकिन अब किरणों की माइट से हरेक आत्मा के संस्कार रूपी कीटाणु को नाश करने का कर्त्तव्य करना है। अभ्यास ऐसा हो जो चलते फिरते आपके मस्तिष्क से लाईट का गोला नज़र आये और चलन से, वाणी से नॉलेज रूपी माइट का गोला नज़र आये अर्थात् बीज नज़र आये। मास्टर बीजरूप, लाइट और माइट का गोला बनो तब साक्षात् वा साक्षात्कार मूर्त बन सकेंगे।

4) कोई भी हिसाब, चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लगन की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति इस पर अब विशेष अटेन्शन दो तब रहे हुए सब हिसाब-किताब पूरे होंगे।

5) जैसे वृक्ष का रचयिता बीज, जब वृक्ष की अन्तिम स्टेज आती है तो वह फिर से ऊपर आ जाता है। ऐसे बेहद के मास्टर रचयिता सदा अपने को इस कल्प वृक्ष के ऊपर खड़ा हुआ अनुभव करो, बाप के साथ-साथ वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप बन शक्तियों की, गुणों की, शुभ भावना शुभ कामना की, स्नेह की, सहयोग की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य ऊंचा रहता है तो सारे विश्व में स्वतः ही किरणें फैलती हैं। ऐसे मास्टर रचयिता वा मास्टर बीजरूप बन सारे वृक्ष को किरणें वा पानी दे सकते हो।

6) जब विशेष याद में बैठते हो तो अपने कोई न कोई श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर बैठो। कभी 'मास्टर बीजरूप' की स्थिति के आसन पर, कभी 'अव्यक्त फरिश्ते' की सीट पर, कभी 'विश्व-कल्याणकारी स्थिति' की सीट पर सेट हो जाओ, ऐसे हर रोज़ भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर व सीट पर सेट होकर बैठो तो शक्तिशाली याद का अनुभव करेंगे।

7) जब आप अपनी बीजरूप स्थिति में स्थित रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पड़ेगा। अगर बीजरूप स्थिति में स्थित न रहे सिर्फ विस्तार में चले गये तो ज्यादा विस्तार से वैल्यु नहीं रहेगी, व्यर्थ हो जायेगा इसलिए बीजरूप स्थिति में, बीजरूप की याद में स्थित हो फिर बीज डालो। फिर देखना उस बीज का फल कितना अच्छा और सहज निकलता है।

8) विशेष अमृतवेले पावरफुल स्थिति की सेटिंग करो। पावरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। जैसा श्रेष्ठ समय है, वैसी श्रेष्ठ स्थिति होनी चाहिए। साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो, लेकिन यह विशेष वरदान का समय है। इस समय को यथार्थ रीति यूज करो तो सारे दिन की याद की स्थिति पर उसका प्रभाव रहेगा।

9) बीजरूप को सदा साथ रखो तो माया का बीज ऐसा भस्म हो जायेगा जो फिर कभी भी उस बीज से अंश भी नहीं निकल सकेगा। वैसे भी आग में जले हुए बीज से कभी फल नहीं निकलता इसलिए बीज को छोड़ सिर्फ शाखाओं को काटने की मेहनत नहीं करो। बीजरूप द्वारा विकारों के बीज को खत्म कर दो तो बार-बार मेहनत करने से स्वतः ही छूट जायेंगे।

10) एकान्तवासी अर्थात् कोई भी एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित होना। चाहे बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित हो जाओ अर्थात् विश्व को लाइट-माइट देने वाले - इस अनुभूति में स्थित हो जाओ। तो यह एक मिनट की स्थिति भी स्वयं को और औरों को भी बहुत लाभ दे सकती है।

11) बीजरूप स्थिति का अनुभव करने के लिए एक तो मन और बुद्धि दोनों को पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। अगर ब्रेक नहीं दे सके तो भी ठीक नहीं। अगर टर्न नहीं कर सके तो भी ठीक नहीं। तो ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति से बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी। एनर्जी जितना जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

12) बीजरूप स्थिति में रहने का अभ्यास तो करो लेकिन कभी लाइट-हाउस के रूप में, कभी माइट-हाउस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन... भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी करो तो रमणीकता आयेगी, बोर नहीं होंगे।

13) बीजरूप स्थिति या शक्तिशाली याद की स्थिति यदि कम रहती है तो इसका कारण अभी तक लीकेज है, बुद्धि की शक्ति व्यर्थ के तरफ बंट जाती है। कभी व्यर्थ संकल्प चलेगे, कभी

साधारण संकल्प चलेगे। जो काम कर रहे हैं उसी के संकल्प में बुद्धि का बिजी रहना, इसको कहते हैं साधारण संकल्प। याद की शक्ति या मनन शक्ति जो होनी चाहिए वह नहीं होती इसलिए पावरफुल याद का अनुभव नहीं होता इसलिए सदा समर्थ संकल्पों में, समर्थ स्थिति में रहो तब शक्तिशाली बीजरूप स्थिति का अनुभव कर सकेंगे।

14) मैजॉरिटी भक्तों की इच्छा सिर्फ एक सेकेण्ड के लिये भी लाइट देखने की है, इस इच्छा को पूर्ण करने का साधन आप बच्चों के नयन हैं। इन नयनों द्वारा बाप के ज्योतिस्वरूप का साक्षात्कार हो। यह नयन, नयन नहीं दिखाई दें लाइट का गोला दिखाई दे।

15) अभी संगठित रूप में लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन शक्तिशाली वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। अभी अपनी वृत्ति को, वायब्रेशन, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ। चारों ओर का वायुमण्डल सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ भावना, शुभ कामना वाला बने तब यह लाइट-माइट प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी।

(ब) विदेही स्थिति का अनुभव करो

16) जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसे मानकर चलेंगे तो देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति बन जायेगी।

17) जैसे विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है, बच्चों को विदेही बनाने के लिए। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते, विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो, इसी स्थिति को “विदेही स्थिति” कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है। बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव!

18) विदेही बनने में “हे अर्जुन बनो”। अर्जुन की विशेषता - सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाले अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाले अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन बनो।

19) बाप के समीप और समान बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे कर्मातीत बनने का एजैम्पल

साकार में ब्रह्मा बाप को देखा, ऐसे फॉलो फादर करो। जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म करते कर्मेन्द्रियों का आधार लो और न्यारे बन जाओ।

20) अपने को शरीर के बंधन से न्यारा बनाने के लिए अवतार समझो। अवतार हूँ, इस स्मृति में रह शरीर का आधार ले कर्म करो। कर्म के बंधन में नहीं बंधो। देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव करो।

21) जो भी परिस्थितियाँ आ रही हैं और आने वाली हैं, उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा... क्या होगा..., इस क्वेश्चन को छोड़ दो, अभी विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ। विदेही बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।

22) अन्त समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे, परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद ऑनर होगी जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद ऑनर का सबूत देगी।

23) कोई भी सेवा के प्लैन्स बनाते हो, भले बनाओ, भले सोचो, लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो। सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं।

24) जैसे ब्रह्मा बाप विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बन अव्यक्त बने, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का रसपान्ड विदेही बनकर दो। सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो।

25) सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह विदेही बनने का अभ्यास करते रहो। दो चार सेकण्ड भी निकालो इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो सारा दिन बुद्धि चलती रहती है, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय विदेही हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।

26) जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है, फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़ेगी।

27) अगर सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।

28) विदेही माना देह से न्यारा। स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं और देह से न्यारा हो गया तो सबसे न्यारा हो गया, इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए।

29) चारों ओर हलचल है, व्यक्तियों की, प्रकृति की हलचल बढ़नी ही है, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानि बना लेना। तो बीच-बीच में ट्रायल करो एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ स्थित कर सकते हैं! इसको ही साधना कहा जाता है।

30) विदेही बनने की विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है इसलिए बापदादा कहते हैं अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अविनाशी, अमिट तिलक रहे।

त्रिमूर्ति दादियों के प्रेरणादाई शिक्षाप्रद अनमोल महावाक्य(अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

“वाणी निर्मल हो, भावना निमित्त भाव की हो, निर्मान बनके सेवा करो, तो मान मिलता रहेगा”

(गुल्जार दादी जी - 2006)

बाबा बच्चों को मिलन के साथ सेवा का डबल चांस देता है तो रिटर्न भी डबल करना होगा। बाबा को रिटर्न क्या चाहिए? जो बाबा ने कहा वो करो। मम्मा इसी एक विशेषता से नम्बरवन बनी, वो सदा कहती थी बाबा का कहना और मेरा करना। बाबा जो भी डायरेक्शन देता, मम्मा हमेशा हाँ जी कहती। बाबा ने कहा है, करना ही है। बाबा और कुछ तो कहता नहीं है सिर्फ जो श्रीमत

दी है उस पर चलो। श्रीमत तो सभी को पता ही है। हमारी जीवन ही श्रीमत के आधार पर है। देखो, अमृतवेले उठते हैं तो यह श्रीमत है। अमृतवेले से श्रीमत मानना और उस अनुसार चलना। मुरली भी उसी विधि से सुनें, जो बाबा चाहता है। सुनना माना बनना। एक एक शब्द बाबा का कितना श्रेष्ठ है, वह बाबा का एक एक शब्द हमारे दिल में लग जाए। तो बाबा जो कहता है बस

आँखे बन्द करके करते जाओ। उसमें सवाल ही नहीं है, कैसे करें, क्या करें की बात ही नहीं है। बाबा ने कहा यानि आलमाइटी अथॉरिटी ने कहा, तो बाबा का एक एक बोल स्पष्ट भी है और सत्य भी है। तो बाबा ने कहा और हमने किया। सोचना तब पड़ता है जब क्वेश्चन मार्क हो, फायदा होगा या नुकसान होगा? तब सोच चलता है। लेकिन बाबा ने करके दिखाया। ब्रह्मा बाबा हम सबके सामने एक एक्जाम्पल हैं। शिवबाबा की मत पर बाबा ने जो कदम उठाया उससे अव्यक्त हो गये, मंजिल पर पहुँच गये ना! यह प्रत्यक्ष सबूत है। तो रास्ता ठीक था तभी तो मंजिल पर पहुँचे ना। बस, हमको सोचना नहीं है, यह सफलता होगी, नहीं होगी, ऐसा तो नहीं होगा, वैसा तो नहीं होगा, सोचने की आवश्यकता ही नहीं है। बाबा ने कहा हमने किया, बस ऐसी स्थिति होनी चाहिए, तो ऐसी है? सारे दिन की दिनचर्या श्रीमत के आधार पर सामने लाओ, अभी इस समय बाबा ने क्या कहा है? भोजन के लिए बाबा ने क्या डायरेक्शन दिये हैं? बाबा की याद में योगयुक्त होकर भोजन बनाओ फिर बाबा को भोग लगाओ, याद करके खाओ। हरेक चीज़ का डायरेक्शन है ना! कोई भी कर्मणा सेवा करो तो भी कर्मयोगी होके करो। सिर्फ कर्मकर्ता नहीं, कर्मयोगी। कर्म और योग दोनों का बैलेंस हो। जो भी काम करो उसमें पहले चेक करो यह बाबा ने किया, बाबा की श्रीमत है! जो श्रीमत है उसको हर कर्म के पहले स्पष्ट सामने लाओ। फिर उस अनुसार चेक करो कि जो बाबा की श्रीमत थी, उस अनुसार मैंने किया? चेक करेंगे तो चेंज होंगे।

कोई भी संकल्प उठाना माना अपने में संशय आना, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। अपने आप में ही संशय उठता है, पता नहीं होना तो चाहिए, होना तो है ही... होगा या नहीं माना संशय। अपने में पूरा निश्चय नहीं है। अपने में निश्चय है तो विजय है। एक होना ही है, दूसरा हाँ देखेंगे, कर तो रहे हैं, पता नहीं... तो कौन-सा अच्छा लगता है? होना ही है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाबा है ना। बाबा की अथॉरिटी में बहुत नशा होना चाहिए। तो सीट पर सेट हो जाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह है निश्चय की सीट पर सेट होना। बिना सीट के कोई नहीं मानता इसलिए अथॉरिटी और अधिकारी, यह दो शब्द याद रखो। अपनी अथॉरिटी याद ही नहीं है तो अपना अधिकार किस पर रहेगा?

बाबा कहते बच्चे आपकी वाणी निर्मल हो, भावना निमित्त भाव की हो, निर्मान बनके सेवा करो। अगर निर्मान है तो मान मिलेगा। स्वमान में रहो तो मान मिलेगा। मांगने से मान नहीं मिलता, आप निर्मान बनो तो आपको मान जरूर मिलेगा। अगर संकल्प भी रखेंगे कि मुझे तो कोई पूछता ही नहीं है, मैं इतना कुछ करती हूँ, देखते ही नहीं हैं, मैं क्या कर रही हूँ, कैसे कर रही

हूँ... जैसे मैं हूँ या नहीं हूँ, किसी को पता ही नहीं पड़ता है। सेवा करके आते हैं तो भी नहीं पूछते हैं। लेकिन वो नहीं पूछती कोई बात नहीं, पर बाबा की सेवा करने से खुशी रूपी अमृत तो पी लिया ना, अगर सच्ची सेवा की तो। अभिमान वाली की, फिर तो नहीं मिलेगा। लेकिन जब सच्चे दिल से हम सेवा करते हैं तो बाबा के प्यार का प्याला मिलता है, खुशी का प्याला कितना पीते हैं। तो बाबा ने आपको पूछ लिया, बाकी कोई ने नहीं पूछा तो क्या बात है! आखिर भी फैसला कौन करेगा? किसको क्या पद देना है, बाबा ही फैसला करेगा ना। तो हमारे को बाबा पूछने वाला है। रात्रि को सोओ तो जैसे बाबा मालिश कर रहा है, माथे में बहुत ताकत दे रहा है, ऐसे अनुभव करते सो जाओ।

बाबा की नज़र आप पर गई, आप ब्रह्माकुमारी बनी तो बाबा ने तो पूछा ना। हाँ, यह पेपर आते हैं क्योंकि सेन्टर में तो समान होते हैं ना। कभी किसको ज्यादा पूछ लेते होंगे, हमें नहीं पूछते, यह माया आती है। समान में भी आती है और बड़े छोटे में भी आती है। लेकिन हमको यह सोचना चाहिए, हम बने किसके हैं? दीदी के या बाबा के? बाबा के बने हैं ना। तो बाबा ने आपको पूछ लिया है ना। मेरे बच्चे कहा ना, और क्या कहेगा और क्या पूछेगा! तो बाबा बैठा है इसलिए हमारे को कोई कमी नहीं है। बाबा ने स्वराज्य दे दिया, राजा बना दिया और क्या पोजीशन चाहिए? बाबा ने मुझे राजा बच्चा कहा, तो यह पोजीशन कम है क्या! क्योंकि राजा से बड़ा तो कोई होता नहीं। बाबा तो रोज़ आपकी पालना करते हैं। बस, बाबा की गोद में सो जाओ। लेकिन बाबा की कोई स्थूल में तो गोदी है नहीं। गोदी माना बाबा की याद, बाबा की श्रीमत। बाबा की याद में सोयेंगे तो जैसे एकदम बाबा की गोदी में सो गये, ऐसा अनुभव होगा। एक ही टाइम पर बाबा कितनों को एक साथ सहयोग दे सकता है, पूछ सकता है, सुला सकता है, नचा सकता है, ऐसा बाबा हमको मिला है, इसलिए बाबा के साथ का फायदा उठाओ तो फीलिंग से दूर रहेंगे। बाबा मिला, भाग्य मिला... यह फीलिंग भले करो। बाकी छोटी-छोटी बातों की फीलिंग नहीं करो। क्योंकि फीलिंग करना माना दुःख लेना दुःख देना। तो न दुःख देना, न दुःख लेना, यह आदत अपने को परेशान करती है इसलिए परेशान नहीं होना।

हम भगवान के बच्चे हैं, सर्वशक्तिवान हैं, महावीर हैं, शिव-शक्तियाँ हैं... जब इस शान से परे हो जाते हैं तब परेशान होते हैं। तो परेशान कभी भी नहीं होना चाहिए इसलिए बाबा कहते हैं कि शुद्ध संकल्पों की शक्ति से वेस्ट थॉट्स खत्म कर दो। बीते हुए अच्छे अच्छे अनुभवों को याद करो तो व्यर्थ संकल्प की लाइन कट हो जायेगी।

“साइलेन्स की शक्ति से वायुमण्डल को ऐसा शीतल बना दो जो व्यर्थ समाप्त हो जाये”

(दादी जानकी जी 11-02-2006)

अशान्ति को भगाने के लिए शान्ति का खजाना भरपूर हो। हमारी शान्ति को देख, अशान्ति बिचारी डरके मारे भाग जाये। शान्ति ऐसी चीज़ है जैसे साइंस अन्धकार को मिटाके रोशनी देती है, माइक भी देती है, जिसके द्वारा दूर दूर तक आवाज सुनाई पड़ता है। जैसे साइंस द्वारा ऑटोमेटिक सेवा चलती है, वैसे साइलेंस द्वारा भी ऑटोमेटिक सेवा चलती है। साइलेन्स की शक्ति से वायुमण्डल को ऐसा शीतल बना दो जो हर एक का जी चाहे यहाँ बैठे रहें और कोई ख्याल न आये। जहाँ वायुमण्डल पॉवरफुल है वहाँ व्यर्थ समाप्त हो जाता है। तो साइलेंस में कितने फायदे हैं, समझदार बन इसकी गहराई में जाओ। पीस और साइलेंस में भी फर्क है। शान्ति चाहिए तो अन्दर डीप जाओ, साइलेन्स में चले जाओ तो लगेगा जैसेकि शान्ति की खान है। अपने अन्दर देखो शान्ति ही शान्ति हो तो उसमें प्रेम भी आता है। याद किया तो शान्ति आई और शान्ति से प्रेम आया। बापदादा हम आत्माओं को बहुतकाल के बाद देख खुश होते हैं, तो बच्चे भी बाप को देख हर्षित रहना सीखते हैं। संगमयुग हर्षित रहने का युग है। कोई मूर्छित भी हो तो उसको हर्षित बना दो, ऐसे सूक्ष्म वायब्रेशन दो। शान्ति की शक्ति का वायब्रेशन इतना पॉवरफुल हो। अच्छा।

दूसरा क्लास

“बाबा चाहता हैं मेरा हर एक बच्चा निराधार बनें, अन्तर्मुखता के आधार से अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहे”

कोई भी कारण से व्यर्थ संकल्प न आये, इसके लिए अपने संकल्प की क्वालिटी फर्स्टक्लास हो। परमधाम निवासी बाबा को जिस प्रकार संकल्प आया, जिस संकल्प से बाबा ने हम बच्चों को पैदा किया है। बाबा बच्चों को टच करता है, खींचता है, प्रैक्टिकल करने की शक्ति भी देता है। अपनी स्व-उन्नति के लिए या सेवा के लिए कोई काम का संकल्प है तो करो, इस संकल्प में क्या फायदा है, वो देखो। हमारे को कैसा संकल्प

करना चाहिए, बाबा वो सिखाता समझाता है।

संकल्प में भी चार बातें हैं – एक है स्वयं की कोई कमजोरी। दूसरी है कमी, तीसरी है आदत। उसी अनुसार घड़ी-घड़ी किसी बात का चिंतन। जैसे कोई को बीड़ी-सिगरेट की आदत है, तो उसी का चिंतन चलता है। ऐसे बिना काम के संकल्प करने की आदत नहीं छूटती है। जो किया है या करना है, वो भी फालतू संकल्प चलता रहता है। अभी कुछ करना है, इसके बाद करना है, कर लेंगे – लेकिन अभी उसका संकल्प क्यों आये! बार-बार वही ख्याल क्यों आये? तो अन्दर डीप साइलेंस में जाना माना अन्तर्मुखी होना। यह अन्तर्मुखता भी क्या है, उसकी गहराई में जायें। बाहरमुखता तो नेचुरल है, भले अच्छे तरीके से कहेंगे परन्तु वो है बाहरमुखता। अन्तर्मुखता माना मन बुद्धि से बाबा के कनेक्शन में रह अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहना। कभी किसी के प्रति अगर अन्दर में द्वेष भाव है तो अन्तर्मुखता नहीं है। जैसे बाबा हमारे अन्दर को जान करके हमारे अन्दर में परिवर्तन लाना चाहता है, यही तो परमात्मा की कमाल है। हमारे अन्दर अच्छाई भी है तो बुराई भी है, कुछ भी है तो जैसे उसमें देह-अभिमान भरा हुआ है। भगवान की जो नॉलेज है, जो उसके गुण हैं, जो उसकी शक्ति है वो मेरी सोल में आ जाये, तब कहेंगे यह जो आत्मा है, भगवान की इसमें कॉन्सेस है। जो वो कहता है समझाता है, वो इसमें है। तो अन्तर्मुखी होके साइलेंस में जाना और अपनी कॉन्सेस में देखना क्या-क्या है? बाहरमुखता से अन्दर जाना फिर अन्तर्मुखता से जो अन्दर भरता है वो बाहर आता है।

बाबा ने कहा तुम विश्व कल्याणकारी, विश्व के मालिक बन रहे हो। स्व को ईश्वर की संतान समझे तो स्व पर राज्य करने की शक्ति आयेगी। यही कर्मेन्द्रियां, यही मन बुद्धि, यही सम्बन्ध पर उसके गुलाम नहीं होंगे। प्रभाव या दबाव में नहीं होंगे। किसके दबाव में आना या दबाव डालना, जब तक यह नेचर है वो सोल कॉन्सेस नहीं है या कोई भी संस्कार है तो भी वो सोल कॉन्सेस नहीं है। सोल में परमात्मा का ज्ञान उसके गुण और शक्ति प्रवेश हों जैसेकि अवतरित हों हमारे अन्दर। वो आत्मा में भरा तो

आत्मा को फीलिंग आयेगी, अभी घर जाने का टाइम आया।

टेन्शन में रहना, भारी हो जाना या किसी के साथ व्यवहार में प्रेम न होना क्योंकि उसकी आदत अनुसार प्यार नहीं करते हैं, तो ये भी हमारी ही कमजोरी हो जायेगी। तो अभी देखो मेरा अनुभव क्या है? उस अनुभव से हम क्या सीखें? हमारी प्रोटेक्शन भी हो और हम इन्डीपेंडेंट भी रहें। तो ऐसी अपनी स्थिति बनानी है। बाबा की प्रोटेक्शन फील हो तो भय का ख्याल, ना उम्मीदी का ख्याल आ नहीं सकता। फिर इन्डीपेंडेंट माना किसी के अधीन नहीं, मायाजीत हो गये। सूक्ष्म भी माया क्या है, पता चल गया। बाहरमुखता थोड़ी भी है तो माया का पता नहीं चलेगा। अन्तर्मुखता से पता पड़ेगा क्योंकि बाबा चाहता है मेरा बच्चा निराधार रहे, माया को जीते। सर्वशक्तिवान बाप का बच्चा है वो किसी के अधीन नहीं है। औरों के लिए, उदाहरण के लिए आधारमूर्त बनता है, खुद निराधार है। तो हमारी हर एकटीविटी से बाबा की याद आती रहेगी। याद में रहने से औरों को याद दिलाने की शक्ति अन्दर से काम करती रहेगी।

संगम पर हमारा जितना क्लोज कनेक्शन है, उतना बहुत फायदा है। उपर उड़ने के लिए, घर जाने के लिए बाबा क्या चाहता है, वो एक दो को देख करके प्रैक्टिकली करने के लिए जो

अभी हमको एक दो से मदद है, ईश्वरीय स्नेह है। अगर सम्बन्ध में हमको कहाँ से कोई ईश्वरीय स्नेह का अनुभव नहीं है, तो उसके लिए भारीपन अनुभव होता होगा। अनुभवों के अनुसार चलना, यह भी सेवा हो जाती है। तो हरेक अपने से पूछे मेरे अनुभव में क्या-क्या है? हमारे अनुभव में इतनी शुद्धि, शान्ति, प्रेम.. परमात्मा का भरा हुआ है तो आज का आया हुआ भी नम्बरवन जा सकता है और प्रैक्टिकल हो रहा है। तो जब हमें ऐसा संकल्प आयेगा तो बाबा उसमें शक्ति भरेगा तो प्रालब्ध मेरी बन जायेगी। तो अभी ऐसी क्वालिटी वाले बन जाओ जो भगवान के काम आ सको। तो अन्तर्मुखी हो साइलेंस में जाओ। अन्तर्मुखता है दरवाजा उसके अन्दर डीप साइलेंस में जा करके अपने आपको देखो, कैसे संकल्प पैदा करने की ट्रेनिंग बाबा दे रहा है।

संगठन की साइलेंस से सब खींचके आयेगे, जो सच्चे पुरुषार्थी होंगे वो कभी मिस नहीं करेंगे क्योंकि कईयों को अमृतवेले से बहुत फायदे हैं। जिनको अमृतवेले से फायदे हुए है वो कैसी भी हालत में, मरने की घड़ी तक भी अमृतवेला मिस नहीं करेंगे। जो बहुतकाल से किया हुआ अभ्यास है वो काम आयेगा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

सर्व ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करने वाले ही मर्यादा पुरुषोत्तम बनते हैं

(1998)

1) मुक्ति वर्ष मनाने के लिए हम सबको अपने पुराने संस्कारों से, लौकिक अलौकिक सम्बन्धों से, पुरानी दुनिया से, दुनिया के पदार्थों से मुक्त होना है। बाबा ने हमें सर्व श्रेष्ठताओं से भरपूर किया है। सर्व प्राप्ति से सम्पन्न, सन्तुष्ट बनाया है, जितना उसी स्वमान में रहते हैं उतना मन्सा सेवा स्वतः होती है।

2) हमें सर्व ईश्वरीय मर्यादाओं के अन्दर रहना है। जो भी बी.के. सर्व मर्यादाओं का पालन करते हैं वही मर्यादा पुरुषोत्तम बनते हैं। और जब स्वयं करते तो हमें देख दूसरे भी करते हैं। बाबा ने हमें सर्व श्रेष्ठ मर्यादाओं के इशारे दे रखे हैं जिसको दूसरे शब्द में बाबा कदम-कदम पर श्रीमत कहते हैं। हमारी ईश्वरीय मर्यादाओं में सबसे बड़ी मर्यादा है - कदम-कदम पर श्रीमत का पालन करना। हम सभी को एक ही श्रीमत मिली है न कि भिन्न-भिन्न। दुनिया में जाति-पाँति के आधार पर अपनी-अपनी मर्यादायें होती

हैं परन्तु यहाँ हम सबकी मर्यादा एक ही है।

3) एक बाबा, एक बड़ी माँ और एक ईश्वरीय परिवार, एक की ही याद में रहना। एक बाबा दूसरा न कोई, यह है हमारी नम्बरवन मर्यादा, इसी को ही योग कहते हैं। जिसकी गहरी अनुभूति जो जितनी करे उतनी थोड़ी है। इस योग में जितना-जितना सूक्ष्म जाओ उतना शक्तियों का, सुख का अनुभव होता है, उतना ही हमारे चेहरे पर लाइट माइट आती है, इसमें हम सबकी एक ही मत है। और उसके लिए बाबा हमें मन का मौन सिखाते हैं। मुख का मौन तो बाहरमुखता है लेकिन मन का मौन अन्तर्मुखता है। तो मन का मौन जितना स्वयं धारण करते हैं उतना अपने स्थान का वायुमण्डल लाइट और माइट वाला रहता है और उसका ही आने वालों पर प्रभाव पड़ता है और यह सूक्ष्म सकाश ही सेवा करती है।

4) यदि मन का मौन यानि अन्तर्मुखता नहीं है तो उसका कारण है मन के अन्दर मतभेद। कोई भी कारण वश मेरे तेरे में आकर जो हमारा आपसी मतभेद रहता है, उसको ही मनमुटाव कहते हैं, वास्तव में यही सेवाओं के लिए वा स्वयं के लिए सबसे बड़ा विघ्न है। इसके लिए हमारा आपस में इतना स्नेह हो जो हमारे आपसी स्नेह को देख दूसरे भी उसी स्नेह में डूब जायें। परन्तु कभी-कभी जो आपस में दो मतें होती तो आने वाला भी देखकर संशय बुद्धि हो जाता है इसलिए हम सभी पहले खुद सूक्ष्म मन का मौन रखें अर्थात् मन में भी सबके लिए लाइट रहें। अगर मन का संकल्प लाइट है तो यह लाइट दूसरों की बहुत सेवा कर सकती है। बाबा हमेशा लाइट शब्द के दो अर्थ बताते हैं - एक लाइट माना हल्के रहो, दूसरा लाइट माना अपनी योग की लाइट हो। तो डबल लाइट रहो अर्थात् आपस में भी हल्के रहो और लाइट का वातावरण बनाओ। यह बाबा की बहुत सूक्ष्म आश है कि हर सेन्टर पर अव्यक्त स्थिति का वायुमण्डल बनें अर्थात् हर सेन्टर जैसेकि अव्यक्त वतन बन जाये। इसमें जैसा मैं करूँगी मुझे देख दूसरे करेंगे। यह जो कभी-कभी क्वेश्चन उठता, संगठन है क्या करें! नहीं।

5) जितना मैं करूँगी उतना मुझे देख दूसरे करेंगे। आप लोग मधुबन में आते, भले मधुबन में अनेक भाई-बहनें रहते सबकी एक जैसी स्थिति तो नहीं है। लेकिन यहाँ जो बाबा की चरित्र भूमि, कर्तव्य भूमि, शक्ति की भूमि रही है और आज भी मधुबन में ऐसे बहुत अच्छे बाबा के समर्पित बुद्धि वाले बच्चे रहते हैं। उसी का वातावरण पर बहुत प्रभाव पड़ता। आप खुद अनुभव करते कि मधुबन में आने वालों को कितना दिल के अन्दर छाप लग जाती है क्योंकि वह ऐसी सेवाओं को देखते हैं, सभी बड़े प्यार से और निःस्वार्थ सेवा करते हैं। कोई कैसा भी आया प्यार से सेवा करते, यह उन्हीं के दिलों में छाप हो जाती है। ऐसे अनेक अनुभव बताते। तो ऐसा वायुमण्डल हर स्थान का हो। हम सब ज्ञानी तू आत्मायें हैं, सभी त्यागी हैं, समर्पित बुद्धि हैं। राजयोगी हैं, सभी एक दो के साथी सहयोगी होकर रहते हैं। सबके साथ मिलकर सेवायें करते हैं। तो हर स्थान का वातावरण भी ऐसा मनभावन होना चाहिए।

6) बाबा कहते हैं बच्चे, पुरानी दुनिया के वैभव, वस्तु की आकर्षण न हो। पुराने संस्कारों का जो प्रभाव है वह भी खत्म हो जाए। तो सबसे पहले हमारी एक शुभ आशा है कि हम ब्राह्मणों का आपस में अति स्नेह हो। यह जो कई बार चाहे दो रहते हैं या दस रहते हैं यदि आपस में दो का प्यार होता, दो का नहीं तो यह

थोड़ा मतभेद पैदा करता और उसी से फालतू के व्यर्थ संकल्प एक दूसरे के प्रति चलते या वर्णन भी होते या तो महिमा करते या फिर बदनाम भी करते इसलिए इस संगठन से यह मन्त्र ले जाओ कि हमें आपस में अति स्नेह के साथ, अलौकिकता के रूप में रहना है। जिसको बाबा ने कहा लाइट रहो। ऐसी अलौकिकता अपने में भरकर जाओ।

7) हमारी मैनेजमेन्ट पहले चलती है संकल्पों से, हमारे शुभ संकल्प सदा रहें इसकी कन्ट्रोलिंग सीखो ताकि सूक्ष्म व्यर्थ समाप्त हो जाये और उसी ही अलौकिकता से हमारी आपस में दृष्टि और वृत्ति रहे जिससे शुभ भावनाओं की सकाश मिलती रहे। ऐसी शुभ सकाश एक दो में दो भी, लो भी। तो इस मुक्ति वर्ष में संस्कारों से मुक्त हो, सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ। और वह सम्पन्न स्थिति की रिजल्ट का चार्ट हर एक बाबा को दो। योग का बल सेवाओं को सफल करने में मदद करता है। तो चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति के वायब्रेशन फैलाओ जो अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे फालतू के विघ्न होते, समाज के, पब्लिक के, गांव के या शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है। जैसे दिनोंदिन हम देखते हैं कि सर्विस में कितनी सहज सफलता है, प्रगति है या कितनी वृद्धि हो रही है, यह आप सब भी अनुभव करते हैं।

8) समय प्रमाण अभी हम सब आपस में इतना मिलकर स्नेह से रहें जो सभी कहें कि दो शरीर हैं परन्तु आत्मा एक है। बाबा का यह शब्द पक्का हो कि एवररेडी बनना है। हमारे कारण कभी बाबा की बदनामी न हो। जबकि हम सबको इतना ऊंचा बाबा मिला है तो ऊंचे बाबा के साथ स्थिति भी इतनी ऊंची बनाओ, जिसके लिए बाबा ने दो बातें कही हैं : 1- बेहद के वैरागी बनो। 2- बेहद के त्यागी बनो। तो बाबा की आज्ञाओं को प्रैक्टिकल रूप देना है। एवररेडी बनना है, बेहद के वैरागी बनना है, बेहद के त्यागी बनना है और सन्तुष्टता की खान बनकर रहना है।

9) संगठन में रहते मतभेद न हो इसके लिए पहले एक दो के विचारों को सम्मान देकर सुनना चाहिए। तो दिल में चाहिए सम्मान। सम्मान देकर निर्णय करेंगे तो उस निर्णय को दोनों मानेंगे। फिर भी वन टू होता है तो यह नॉलेज हमें सिखाती है - बड़ों की रिस्पेक्ट करो, छोटों को प्यार करो। अगर दो छोटे बड़े भी होंगे तो छोटों को प्यार से कहेंगे, बड़े को सम्मान से कहेंगे, तो भी मान लेंगे अगर दोनों को सम्मान से बोलेंगे तो भी वह मान जायेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।